Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

अवनद्ध वाद्य 'तबला' का महत्व एवं प्रयोग

Dr. Venu Vanita

Assistant Professor, Kanoharlal Mahila P.G. College Meerut

शोध सार

शब्द और नाद की सृष्टि से उत्पन्न इस ब्रह्मांड में जो तत्व संपूर्ण जड़ चेतन विश्व को समान भाव से एक सूत्र में बांधता है, वह संगीत है। ताल को प्रदर्शित करने का माध्यम है अवनद्ध वाद्य। तबला अवनद्ध वाद्य परिवार का प्रमुख सदस्य तथा सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय ताल वाद्य है। जिसका प्रयोग स्वतंत्र वादन तथा संगत दोनों रूपों में किया जाता है। वर्तमान समय में जिस प्रकार तबला वाद्य का क्षेत्र विस्तीर्ण हो रहा है उसी के अनुपात में इसके लेखन साहित्य की वृद्धि भी उत्तरोत्तर हो रही है।

बीज शब्दः नाद, स्वर, लय, ताल, अवनद्ध वाद्य।

भूमिका

भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा की अनन्य धरोहर सांस्कृतिक सभ्यता का परिचायक धर्म एवं अध्यात्म की सशक्त नींव तथा कला का उत्कृष्टतम् सार तत्व भारतीय संगीत सृष्टि के प्रादुर्भाव के समय से ही अखिल विश्व की प्रत्येक गतिविधि में व्याप्त होकर उसे जीवंत बना रहा है।

भारतीय संगीत की अत्यंत सुदृढ़ एवं गौरवशाली परंपरा में नाद ब्रह्म को परमेश्वर रूप कहा गया है। शब्द और नाद की सृष्टि से उत्पन्न इस ब्रह्मांड में जो तत्व संपूर्ण जड़ चेतन विश्व को समान भाव से एक सूत्र में बांधता है, वह संगीत है। प्राचीन ऋषियों तथा योगियों ने नाद को ब्रह्म रूप माना है उनके अनुसार नाद निर्गुण ब्रह्म का ही सगुण रूप है। प्रणव या नाद की उपासना से ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है। शब्द को आकाश का गुण बताकर उसे आकाश के तुल्य ही व्यापक माना गया है। भारतीय संगीत शब्द और नाद की उपासना से मानव के अंत में विराजित किंतु सुप्तप्राय देवत्व को जागृत करने का प्रयास करता रहा है, और यही वह उदात्तता है जिसने विश्व संगीत बिरादरी में भारतीय संगीत को सिरमौर बना दिया है।

विषय प्रवेश

संगीत के दो आधार स्तंभ है स्वर और लय संगीत में स्वर व लय दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण है। भारतीय संगीत के अंतर्गत गायन तथा तंत्र व सुषिर वाद्यों में स्वर की प्रधानता होती है, जबकि अवनद्ध एवं घन वाद्यों में लय की।

लय संगीत को ताल के माध्यम से स्थाई, सुगम, अनुभूतिगम्य एवं लालित्य से परिपूर्ण बना देती है। ताल को प्रदर्शित करने का माध्यम है अवनद्ध वाद्य संगीत में वाद्यों का एक महत्वपूर्ण स्थान है वाद्यों का अपना पृथक ही महत्व है इसके बिना गायन वादन व नर्तन का सौंदर्य अपूर्ण है। वाद्य शब्द का शाब्दिक अर्थ है वादनीय या बजाने योग यंत्र विशेष। "वदतीति वाद्यम्" जो बोलता है वस्तुतः वही वाद्य है। भारतीय संगीत में विभिन्न वाद्यों की उपयोगिता के आधार पर ही भिन्न भिन्न प्रकार के वाद्यों की रचना की गई। इस प्रकार नाना वाद्यों का एक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

विशाल संग्रह एकत्रित होता चला गया। यद्यपि प्रत्येक वाद्य में अपनी कुछ निजी विशेषता होती है जिनके आधार पर वह दूसरे वाद्यों से पृथक व स्वतंत्र अस्तित्व धारण करता है, वस्तुतः वाद्यों का वर्गीकरण उनके उपयोग, उनके स्वरूप, उनकी निर्माण सामग्री, उनकी वादन शैली तथा उनकी स्वर सीमाओं आदि अनेक तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है। भारतीय वाद्य वर्गीकरण का मुख्य आधार ध्वनि रहा है। ध्वनि के आधार पर शास्त्रों में वाद्यों को अलग–अलग चार प्रकारों में विश्लेषण किया गया है। भारतीय संगीत में वाद्यों को मुख्य रूप से चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

1 तत् वाद्य   2 सुषिर वाद्य   3 अवनद्ध वाद्य   4 घन वाद्य

यह सभी चतुर्विद वाद्य मूलतः नाद को व्यक्त करने वाले होने पर भी इनमें से कुछ स्वर प्रधान है और कुछ ताल प्रधान। तत और सुषिर का एक वर्ग है क्योंकि ये प्रयोग के स्वरांश से संबंध रखते हैं। स्वर–संयोजन तत और सुषिर से उत्पन्न होते हैं। घन व अवनद्ध गीत का मान या नाप होता है और अवनद्ध वाद्यों द्वारा उपरंजन होता है। घन वाद्यों में ध्वनि होते हुए भी पाटो की विविधता नहीं होती। अवनद्ध वाद्यों की वादन क्रिया में हथेली , उंगलियों, पंजा, दंड आदि के विभिन्न रूपों में ध्वनित होने से विभिन्न पाटाक्षर उत्पन्न किए जा सकते हैं।

भारतीय संगीत में तबला

तबला अवनद्ध वाद्य परिवार का प्रमुख सदस्य है। उत्तर भारत के अभिजात संगीत का सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय ताल वाद्य तबला है। तबला का प्रयोग पिछले लगभग तीन चार सौ वर्षों से चला आ रहा है, इन शताब्दियों में कितने ही उच्च कोटि के कलाकार साधक एवं रचनाकार पैदा हुए हैं, परंतु इस सुंदर श्रुति मधुर तथा बहु प्रचलित वाद्य की उत्पत्ति इतिहास में कोई निश्चित मत प्राप्त नहीं हो पा रहा था इसका प्रमुख कारण यह रहा होगा कि बीसवीं सदी के मध्य काल तक के पूर्व की ऐसी कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं मिलती, जिससे उस समय की वादन विधि या कलाकारों का समयबद्ध इतिहास एवं परंपरा की ठोस जानकारी मिल सके परंतु वर्तमान शोध एवं खोज के परिणाम स्वरूप संशोधन के आधार पर इतना कहा जा सकता है कि ″तबला एक भारतीय वाद्य है″। इसके भित्ति चित्र प्राचीन मंदिरों में प्राप्त होते हैं और मूर्तियों के रुप में भी प्राप्त हुए हैं। जनश्रुति के अनुसार तबले के अविष्कार के साथ हजरत अमीर खुसरो का नाम जोड़ा जाता है किंतु इस मत पर पूर्ण रूप से मान्यता नहीं दे सकते आधुनिक काल के संगीतकारों , चिंतको और तबला वादको का ऐसा मत है कि यह स्वाति मुनि के पुष्कर वाद्य से ही प्रेरित एक वाद्य है और तबला सादृश्य वाद्य प्राचीन काल में भी रहा होगा ।धीरे–धीरे विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव से तबला अन्य स्वरूपों तथा अन्य नाम से प्रचलन में रहा होगा परंतु उत्तर मध्यकाल तक उत्तर भारतीय संगीत में जोड़ी के रूप में बजाए जाने वाले एक विशेष उधर्वमुखी अवनद्ध वाद्य के लिए तबला प्रचलन में आ चुका था ।

प्रत्येक ताल वाद्य भारतीय संगीत में मुख्यतरू साथ संगति के लिए ही प्रयुक्त होता है। तबले के विकास के इतिहास के पीछे भी कुछ विशिष्ट गायन शैलियों की लोकप्रियता ही कारण बनी है। 14 वीं एवं 15वीं शती तक उत्तर भारतीय संगीत में ख्याल तथा ठुमरी गायन शैलियों का उद्भभव हो चुका था, परंतु उस समय तक ध्रुवपद धमार गायन शैली और उनके साथी वाद्य पखावज का ही अधिक प्रचार था। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। ख्याल एवं ठुमरी जैसी श्रंगारिक व मधुर गायन शैलियों के लिए पखावज वाद्य उपयुक्त नहीं था।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

अतः किसी अन्य वाद्य की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी और यही आवश्यकता तबले के जन्म और विकास की जननी बनी।

महत्व

तबला एक सर्वप्रथम ताल– वाद्य है, जिसका प्रयोग स्वतंत्र वादन तथा संगत दोनों रूपों में किया जाता है शास्त्रीय संगीत की परंपरा में प्राचीन वाद्य मृदंग ही है परंतु मात्र प्राचीनता के आधार पर ही किसी वाद्य की महत्ता को आंक कर उसकी उपादेयता को निर्धारित नहीं किया जा सकता। भारतीय संगीत में तबला अन्य ताल वाद्यों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय स्थान प्राप्त कर चुका है। आज तबले की स्थिति ऐसी है कि जहां कहीं भी संगीत समारोह की बैठक लगती है, वहां बिना तबले के समारोह अधूरा सा मालूम पड़ता है, हम ऐसे कार्यक्रम की कल्पना भी नहीं कर सकते जिसमें लय व ताल दिखाने के लिए तबले का उपयोग ना किया गया हो।

उत्तर मध्य युग से पल्लवित एवं पुष्पित होता चला आ रहा यह बाद वर्तमान में सर्वाधिक लोकप्रिय वाद्य है। संगीत साधना में रत गायक और वादक के कला प्रदर्शन को तबला संगति अधिक मोहक व सुंदर बना देती है तबले के महत्व का अध्ययन निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत किया जा सकता है।

1 तबला वाद्य का संरचनात्मक स्वरूप

2 एक स्वर का वाद्य

3 सर्वग्राहयता का गुण

4 भौगोलिक परिपेक्ष में तबला

5 संगीत में समय बंधन का माध्यम

6 गतिभेद द्वारा रस निष्पत्ति

7 साथ–संगति व तबला

8 स्वतंत्र वादन व तबला

9 प्रभावी घराना परंपरा

10 फिल्म व लोक संगीत में तबला

1 तबला वाद्य का संरचनात्मक स्वरूप

तबले की बनावट अन्य ताल वाद्यों की अपेक्षा इसका महत्व बढ़ाने में सहायक है। वाद्य के दो उधर्वमुखी भाग व सुविधाजनक ऊंचाई इसके वादन में सुविधा प्रदान करते हैं।

पूर्व में तबले में स्याही व गट्टे का प्रयोग नहीं किया जाता था धीरे–धीरे इसके नादात्मक गुण में सुधार करने हेतु गट्टे व स्याही का प्रयोग आरंभ हो गया। गट्टे व स्याही के कारण ही इसके नाद को ऊंचा नीचा करना संभव हो सका और आज इसी कारण यह नाद की विविधता में सक्षम है। नाद की विविधता के लिए स्वरों के अनुसार इसके मुख का आकार सामान्यतः साढ़े तीन चार इंच से लेकर छह इंच तक प्रचलन में है। उच्च स्वरों के लिए

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

छोटे मुख के तबले व नीचे स्वरों के लिए बड़े मुख के तबले प्रयुक्त होते हैं। तबला वाद्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में सुविधाजनक होता है।

तबले के दाएं मुख पर हथेली तथा उंगलियों दोनों का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार बायें पर भी स्याही लगी होने के कारण उंगलियों तथा हथेली दोनों का प्रयोग होता है। उंगलियों का प्रयोग किए जाने के कारण इसमें बोल कितनी भी द्रुत गति से बजाए जा सकते हैं, जिससे तबला वादन में सुंदरता बढ़ जाती है। इस प्रकार से समझा जा सकता है कि तबला वाद्य की संरचनात्मक विशेषताएं इसके महत्व को द्विगुणित करती हैं और बाकी वाद्यों से विशेष रूप में स्थापित करती हैं ।

2 एक स्वर का वाद्य

तबला एक स्वर का वाद्य है। इसमें विभिन्न स्वर नहीं निकलते। क्योंकि यह ताल प्रधान वाद्य है इसलिए एक स्वर का होना स्वाभाविक है। तबले के दो भाग होते हैं जिनमें से मुख्यतः दाहिने भाग को स्वर में मिलाया जाता है। जिस स्वर में दाहिना तबला होता है उसी स्वर में अनुमानतः बायाँ मिलाया जाता है। किसी भी एक निश्चित स्वर में मिला लेने पर दाएं की पूरी उसी स्वर में बोलती व कायम रहती है।

रागों की स्वर विशेषताओं के अनुसार तबला निश्चित स्वर मध्यम, पंचम, निषाद और षड़ज किसी भी स्वर में प्राप्त हो सकता है। आज तो यह भी संभव हो गया है कि 12 स्वरों में से निश्चित सात स्वरों के दाएं तबले लेकर तबला तरंग का वादन होने लगा है एवं यह वाद्य जलतरंग के समान अलग–अलग रागों व विभिन्न धुनो एवं गानो को प्रस्तुत करने में भी सक्षम है।

3 सर्वग्राहैयता का गुण

आज तबला संगीत कला की विभिन्न विधाओं में दूरी के रूप में कार्य कर रहा है। इसका एक मात्र कारण यही है कि इस वाद्य में अन्य वाद्यों जैसे पखावज, ढोलक, ताशा, नाल आदि वाद्यों के सभी गुण विद्यमान हैं। तबले पर पखावज की भांति थाप भी दी जा सकती है, ढोलक की गमक भी बायें पर निकाली जा सकती है। अर्थात तबले पर विभिन्न वाद्यों की ध्वनि निष्पादन प्रक्रिया इसके स्याही, चांटी, लव आदि विभिन्न आघात स्थल तथा विभिन्न मुख आकृतियां व वादक की प्रहार शक्ति द्वारा सरलता पूर्वक हो जाती है। अतः तबला अपने समकक्ष अन्य ताल वाद्यों का प्रतिनिधित्व सहजता से कर लेता है।

4 भौगोलिक परिपेक्ष में तबला

आज तबला उत्तर भारत तक ही सीमित ना रह कर संपूर्ण भारत में अपना अग्रिम स्थान बना चुका है। इसके अतिरिक्त संपूर्ण विश्व में भी इस वाद्य का अपना महत्वपूर्ण स्थान बन गया है।

"The Tabla bhaiya is is used all over the north east and the West for a company classical light and modern music either vocal or instrumental and it is very essential for Kathak dance."

भारतीय संगीत में तबला वादन इतना प्रचलित है कि इसका प्रयोग शास्त्रीय, उपशास्त्रीय और सुगम संगीत इन सभी विधाओं में किया जाता है। साथ ही धार्मिक आधार पर भी यदि हम दृष्टिपात करें तो प्रत्येक धर्म में तबला

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

प्रचार प्रसार में है। जहां एक और रामायण की चौपाइयों और भजनों में तबला प्रयोग में लाया जाता है, वहीं दूसरी ओर कव्वालियों और सिख कीर्तनों में भी तबला बजाया जाता है।

5 संगीत में समय बंधन का माध्यम

संगीत के दो आधार स्तंभ स्वर और लय भारतीय संगीत के अंतर्गत गायन तथा तंत्र व सुषिर वाद्यों में स्वर की प्रधानता होती है, जबकि अवनद्ध एवं घन वाद्यों में लय की। लय संगीत को ताल के माध्यम से स्थाई, सुगम, अनुभूतिगम्य एवं लालित्य से परिपूर्ण बना देती है। ताल को प्रदर्शित करने का माध्यम है अवनद्ध वाद्य। अखंड समय तक बिना तालबध्ता के संगीत का आस्वादन कठिन हो जाता है। संगीत में तबला द्वारा ताल देने की महत्ता स्पष्ट दृष्टिगत होती है। वास्तव में तबला संगीत में एक समय बंधन अर्थात प्रतिबंध का कार्य करता है। यह गाने बजाने और नाचने को एक निश्चित गति अथवा चाल देता है और उसकी गति पर नियंत्रण रखता है तथा कलाकार को निर्धारित दायरे से बाहर नहीं जाने देता। जिस प्रकार समस्त सृष्टि क्रम में स्वभाविक अपूर्व ताल व्यवस्था अर्थात काल की नियमितता दृष्टिगोचर होती है। उसी प्रकार संगीत के क्षेत्र में यह ताल व्यवस्था संगीत काल नियमितता की सूचक होती है।

6 गतिभेद द्वारा रस निष्पत्ति

संगीत में ताल की गति कलाकार के प्रस्तुति के अनुसार हो तो उसमें रस निष्पत्ति सहज संभव हो जाती है। रौद्र, वीर, श्रंगार, शांत रस के अनुसार गीतों में लय भी उसके अनुरूप आवश्यक होती है। ख्याल, ठुमरी, भजन, ध्रुपद, तराना आदि गीत प्रकारों की प्रकृति के अनुसार ताल एवं लय की संगत रस निष्पत्ति में सहायक होती है। तबला ही ऐसा उपयोगी ताल वाद्य है, जो इस कार्य को करने में अपनी भूमिका बखूबी निभाता है। तबले द्वारा गायन वादन या नृत्य में निश्चित स्थान पर गतिभेद एवं कार्यों द्वारा अधिक से अधिक सौंदर्य सरलता पूर्वक उत्पन्न होता है।

7 साथ–संगति व तबला

प्राचीन काल से वर्तमान काल तक कई अवनद्ध वाद्य प्रचार में आए जिनका सामयिक अनुकूलता के अनुसार संगीत में संगत हेतु प्रयोग होता रहा है, इसी क्रम में उत्तर मध्यकाल में प्रचार में आया अवनद्ध वाद्य तबला वर्तमान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एक ओर जहां तबला ख्याल एवं ठुमरी के साथ संगत करने में सक्षम है, वहीं दूसरी ओर यह गजल, कव्वाली, दादरा, गीत, भजन, लोक संगीत व नृत्य आदि विविध गायन प्रकार व विविध यंत्रों की संगति दक्षता के साथ करता है।

गायन वादन और नृत्य तीनों कलाओं के प्रदर्शन को स्थायित्व प्रदान करना श्रोताओं के मन को आनंदित कर उन्हें आनंद प्राप्त कराना तबला वाद्य की संगति द्वारा ही संभव है। वर्तमान समय में गायन की सभी विधाओं में तंत्र एवं नृत्य की संगति में तबला एक अनिवार्य वाद्य बन चुका है। गायन के अंतर्गत छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल, तराना टप्पा, विलंबित एवं मध्य ठुमरी इन सभी में तथा इनके अतिरिक्त भजन, गीत, ग़ज़ल इत्यादि की संगति में तबला वाद्य अपनी विस्तृत बोल बंदिशों द्वारा सक्षम एवं समर्थ है। साथ ही विभिन्न तंत्र वाद्यों की संगति में भी तबला चार चांद लगा देता है। कत्थक नृत्य की संगति विशेषकर अति प्रभावशाली रहती है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

8 स्वतंत्र वादन व तबला

18 वीं शताब्दी में तबले के प्रचार एवं इसकी अलग–अलग वादन शैलियों के विकास से तबले पर खुले एवं बंद दोनों प्रकार के बोलों का वादन होने लगा तबला वाद्य की स्वाभाविकता एवं मौलिकता के आधार पर इसका स्वतंत्र अस्तित्व प्रचार में आया तथा केवल लहरा वादन की संगति के साथ तबला का एकल वादन रंजक लगने लगा। एकल वादन जितना तबला वाद्य के संदर्भ में प्रचार प्रसार में आता है तथा लोकप्रिय हुआ है उतना अन्य ताल वाद्यों के संदर्भ में नहीं हुआ है। तबला वादकों ने अपनी रचना शक्ति के आधार पर तबले की अनेक बंदिशों की रचना कर तबला साहित्य का विशाल भंडार बनाया जिसमें अगाध वृद्धि हो रही है और निरंतर होती रहेगी।

9 प्रभावी घराना परंपरा

वर्तमान काल में तबला वाद्य को लोकप्रिय बनाने में घरानों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। घरानों से संम्बद्ध कलाकारों ने इस परंपरा को अक्षुण्ण रखा है। घराना परंपरा के अंतर्गत चल रही तबला वादकों की एक लंबी श्रंखला है। प्रायः प्रत्येक तबला वादक किसी न किसी रूप में किसी एक घराने अथवा कभी–कभी एक से अधिक घरानों से संबद्ध रहता है। लगभग सभी स्थानों पर किसी न किसी घराने से संबंधित कलाकारों द्वारा तबला वाद्य को लोकप्रियता प्रदान की जा रही है। तबला वाद्य में संरचनात्मक स्वरूप में सुधार के साथ उसकी वादन शैली के प्रारंभिक रूप के साथ दिल्ली घराना प्रतिष्ठित हुआ उन्होंने वाद्य की संरचना में इच्छित परिवर्तन कर उसे साहित्य से समृद्ध किया तो अजराड़ा घराने में आड़ी लय के कायदे व दाएं बाएं बोलो का सुंदर सामंजस्य बिठाकर अपनी मौलिकता का समावेश किया। लखनऊ घराने में जहां तबले पर पखावज व नृत्य का प्रभाव हुआ वहीं फर्रुखाबाद ने दिल्ली व लखनऊ बाज का मध्य मार्ग अपनाकर अपने बाज को नई दिशा प्रदान की। बनारस घराने में लखनऊ से अधिक पखावज व नृत्य के प्रभाव के साथ–साथ लंबे–लंबे पर परन, लग्गी, लड़ी आदि का काम जुड़ा। इसी तरह पंजाब बाज ने भी तबले पर पखावज के बाज को बंद करके बजाकर तबला वाद्य को और अधिक समृद्ध किया। पहले संचार के साधनों की कमी के कारण कलाकार एक घराने के प्रति बद्ध रहता था परंतु जैसे–जैसे आवागमन व संचार सुविधाओं में क्रांति के कारण सुनने सुनाने का जो अवसर प्राप्त हुआ, उससे अन्य घरानों का प्रभाव वादन शैलियों में देखने को मिलने लगा । वर्तमान में वादन शैलियों पर एक दूसरे घराने का प्रभाव देखने को मिलता है परंतु फिर भी पृथक पृथक वादन शैलियां व परंपराएं शुद्ध रूप में भी प्राप्त होती हैं।

10 फिल्म व लोक संगीत में तबला

प्रारंभ से ही फिल्म संगीत में तबले का वर्चस्व रहा है एक समय में हारमोनियम व तबला इन दोनों वाद्यों पर ही फिल्म संगीत आधारित होता था अर्थात शास्त्रीय संगीत पर फिल्म संगीत आधारित था। जैसे–जैसे श्वेत श्याम फिल्मों से रंगीन फिल्मों तथा पाश्चात्य संगीत का प्रभाव आया वैसे वैसे भारतीय फिल्म संगीत पाश्चात्य वाद्यों की ओर उन्मुख हो गया। परंतु भारतीय फिल्मों में तबले का वर्चस्व कायम रहा ।

किसी भी प्रकार का फिल्म संगीत हो चाहे शास्त्रीय संगीत से प्रभावित हो अथवा लोक संगीत या पाश्चात्य संगीत से विलंबित लय हो या द्रुत लय में हो तबला वाद्य सब की प्रतिपूर्ति एवं सौंदर्य वृद्धि पूर्ण वादन में सक्षम है। फिल्म संगीत एक ऐसा चंचल प्रकृति का संगीत है जिसमें श्रृंगार रस प्रधान तथा कम मात्राओं की व चंचल

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

प्रकृति की ताले जैसे दादरा, कहरवा, पश्तो, रूपक आदि तालों का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है। आज भी झनक झनक पायल बाजे, दो आंखें बारह हाथ जैसी फिल्मों और नाचे मन मोरा मगन धिक धा धिगि धिगि जैसे फिल्मी गीतों में गुदई महाराज का तबला सुनकर लोग झूम उठते हैं। इसी प्रकार लोक संगीत में तबले का प्रयोग उसके ऊपर थोपा हुआ सा नहीं जान पड़ता अपितु वह अन्य लोक ताल वाद्य के साथ लोक संगीत में चार चांद और लगा देता है। वह संगीत को सरस बनाता है आज गांवों कस्बों तक तबले की उपस्थिति दृष्टिगत होती है।

निष्कर्ष

भारतीय संगीत में तबला का प्रयोग पिछले लगभग तीन–चार सौ वर्षों से चला आ रहा है। इन वर्षों में तबला वाद्य का पर्याप्त विकास हुआ है। वर्तमान में तबला वाद्य संगीत कला की विभिन्न विधाओं में धुरी के रूप में कार्य कर रहा है। गायन की सभी विधाओं, तंत्र वाद्य, नृत्य की संगति में तबला एक अनिवार्य वाद्य बन चुका है। अन्य स्वर प्रधान वाद्यों के समान तबले पर स्वतंत्र वादन भी प्रदर्शित किया जा रहा है। इसके साथ ही माध्यमिक स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक यह वाद्य एक विषय के रूप में मान्य है तथा इस में हो रहे शोधकार्य अन्य विषयों के समकक्ष उसे स्थापित करते हुए ज्ञान की अपरिमित दिशाओं को खोलते हैं । जिसके माध्यम से तबला वाद्य के प्रचुर साहित्य एवं विविध वादन शैलियों के दर्शन हो रहे हैं। वर्तमान समय में जिस प्रकार तबला वाद्य का क्षेत्र विस्तीर्ण हो रहा है उसी के अनुपात में इसके लेखन साहित्य की वृद्धि भी उत्तरोत्तर हो रही है। भारतीय अवनद्ध वाद्य के अंतर्गत तबला वाद्य ने राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त की है। भविष्य में भी इसके महत्व प्रचार व प्रसार के बढ़ने की और प्रबल संभावनाएं हैं।

संदर्भ

1 कपूर, त्रप्त. (1989). उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, हरमन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
2 शुक्ल, योगमाया. (1987). तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियां, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय,
3 मिस्त्री, आबान ई.(जनवरी फरवरी 1993). संगीत पत्रिका , संगीत कार्यालय हाथरस।
4 Peggy, holroyde. (July 01-1972). The Music Of India International Thomson Publishing July 1/ 1972
5 मराठे,मनोहर भालचन्द्र राव, (1991) ताल वाद्य शास्त्र , शर्मा पुस्तक सदन लश्कर ग्वालियर।
6 Vishnudas Shirali Sargam: An Introduction to Indian Music Abhinav/Marg Publications; 1st edition- January 1/ 197
7 पेन्तल, गीता, (प्रथम संस्करण 1988) पंजाब की संगीत परंपरा , ओम पब्लिकेशन तृतीय संस्करण 2011।
8 धर्मयुग साप्ताहिक सितम्बर 1979।
9 संगीत कला विहार, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल मिराज, मई 1970।
11 भट्ट, डॉ नलिन सुंदरमस्वर्गीय, साक्षात्कार, 05 07 2007।
12 वनिता, वेणु. (2004) तबला ग्रंथ मन्जूषा, पब्लिशर्स नई दिल्ली।